Title-code: UPHIN-48963

E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

28.09.2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

Top News

98 वर्ष की आयु में हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन का निधन, सीएसए कुलपति ने प्रकट किया दुःख

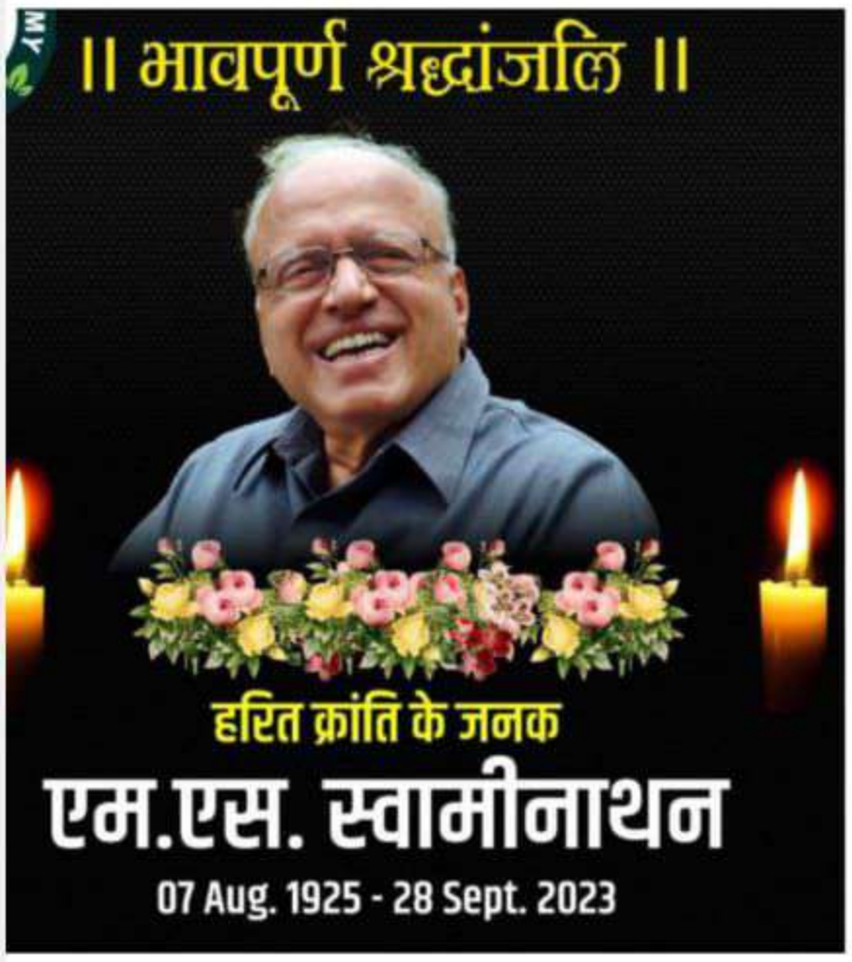

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11:20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

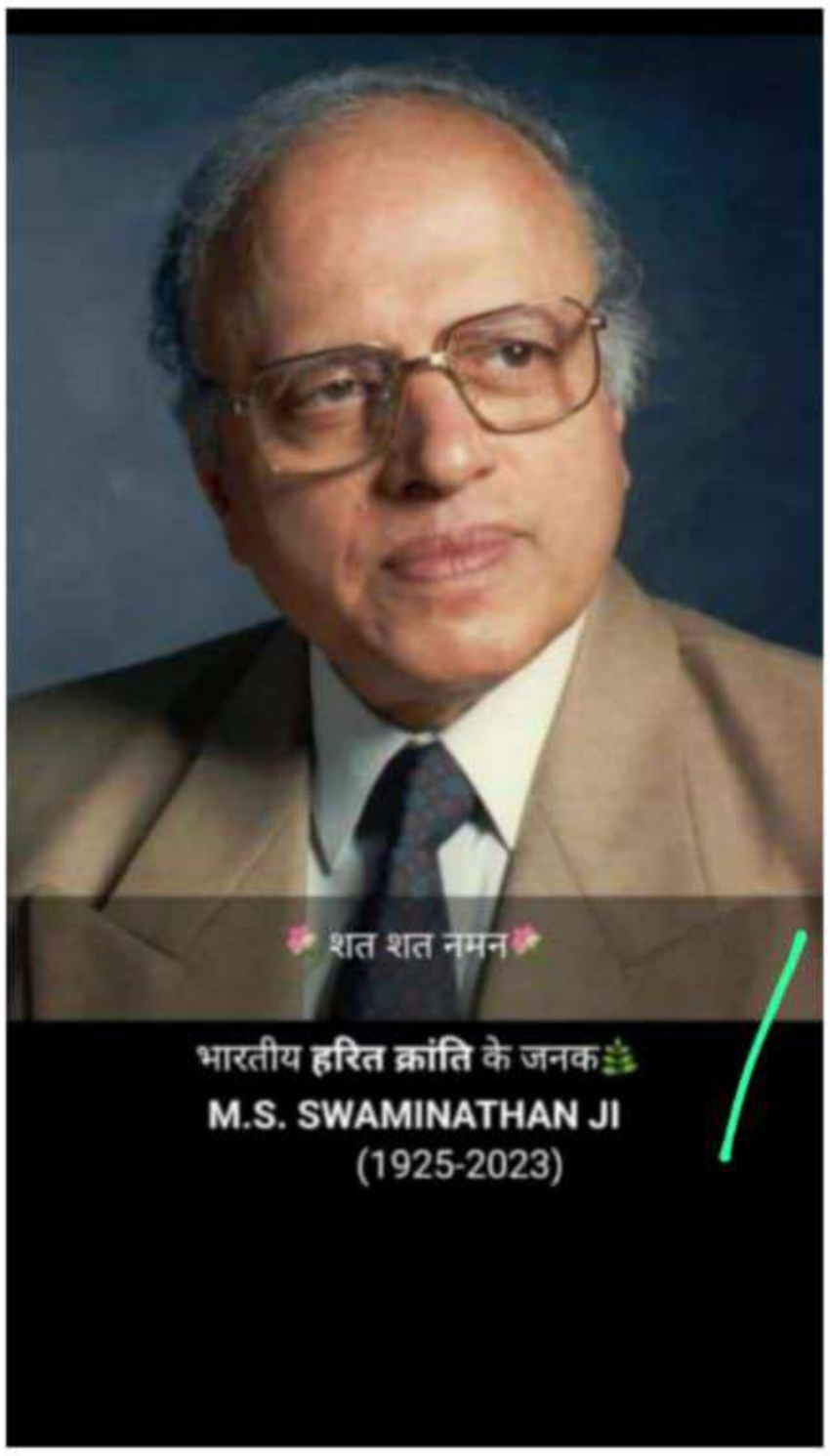

हिंदी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

लखनऊ से प्रकाशित

हरित क्रांति के जनक स्वामीनाथन के निधन, पर कुलपति ने जताया शोक

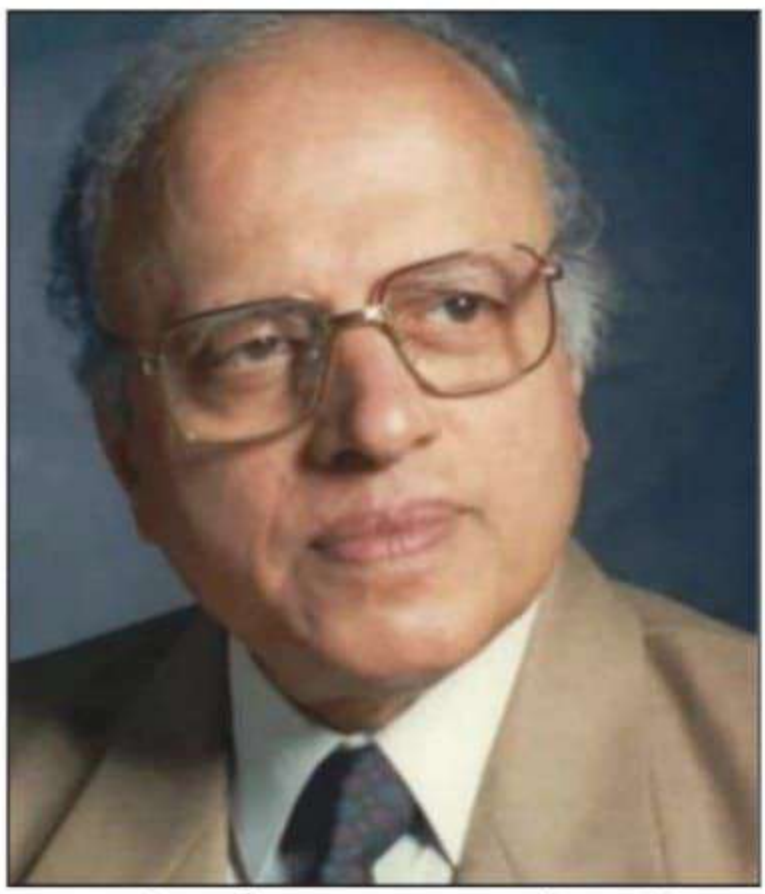

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11ः20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे।

उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 90 कानपुर, शुक्रवार 29 सितम्बर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

हरित क्रांति के जनक स्वामीनाथन के निधन, पर कुलपति ने जताया शोक

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की

सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11:20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामी नाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

हरित क्रांति के जनक को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन जी के दिवंगत होने पर आज विश्वविद्यालय के हजारों छात्र.छात्राओं ने मुख्य प्रशासनिक भवन के सामने क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद जी की प्रतिमा के पास कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह के साथ उनको श्रद्धांजलि दी।और उनके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखा। इस अवसर पर कुलपति डॉक्टर सिंह ने उनके द्वारा दिए गए कृषक हितैषी कार्यों के बारे में विस्तार से छात्र छात्राओं को बताया इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर सी एल मौर्य सहित अन्य प्रोफेसर एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

सीएसए से जुड़े रहे हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन, कुलपति ने जताया दुख

कानपुर, 28 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11.20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उज्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम एस स्वामीनाथन

हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन का निधन

सीएसए कुलपति ने प्रकट किया दुःख।

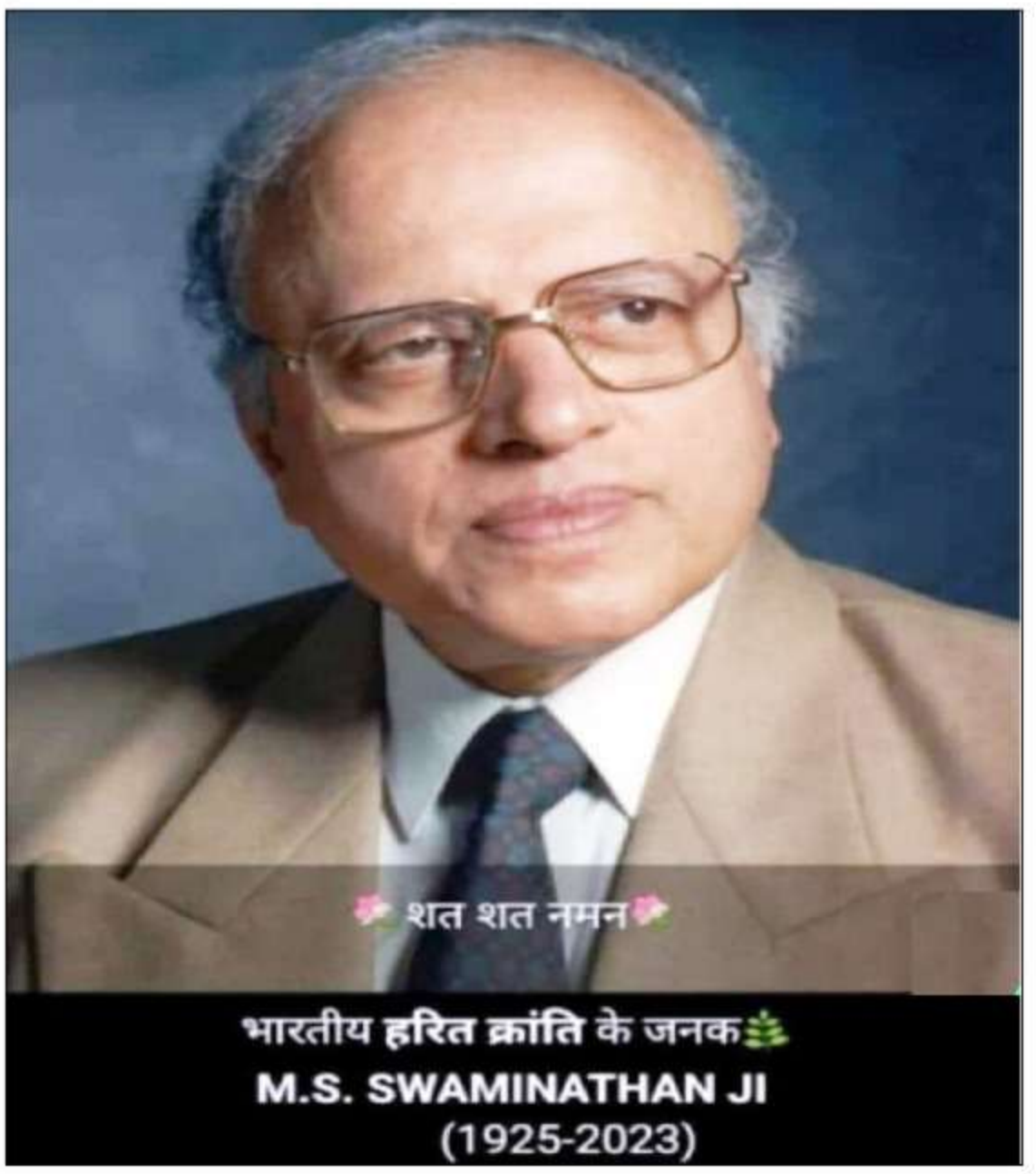

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11:20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

rni no uphin47232

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उरई, कन्नौज, फरूखाबाद, एटा मे प्रसारित

कानपुर, शुक्रवार 29 सितम्बर 2023 पृष्ठ : 8

हरित क्रांति के जनक स्वामीनाथन का दुखद निधन

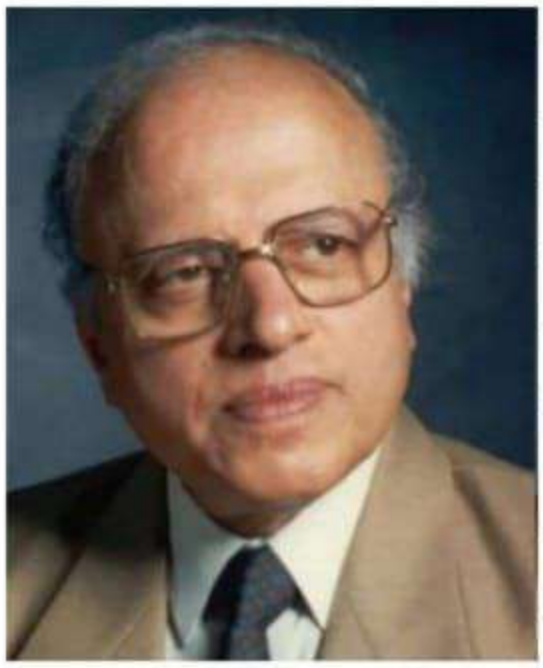

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में गुरुवार को सुबह 11-20 पर अंतिम सांस ली कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एमएस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-202 कानपुर, शुक्रवार 29 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

पुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन का निधन

आज का कानपुर

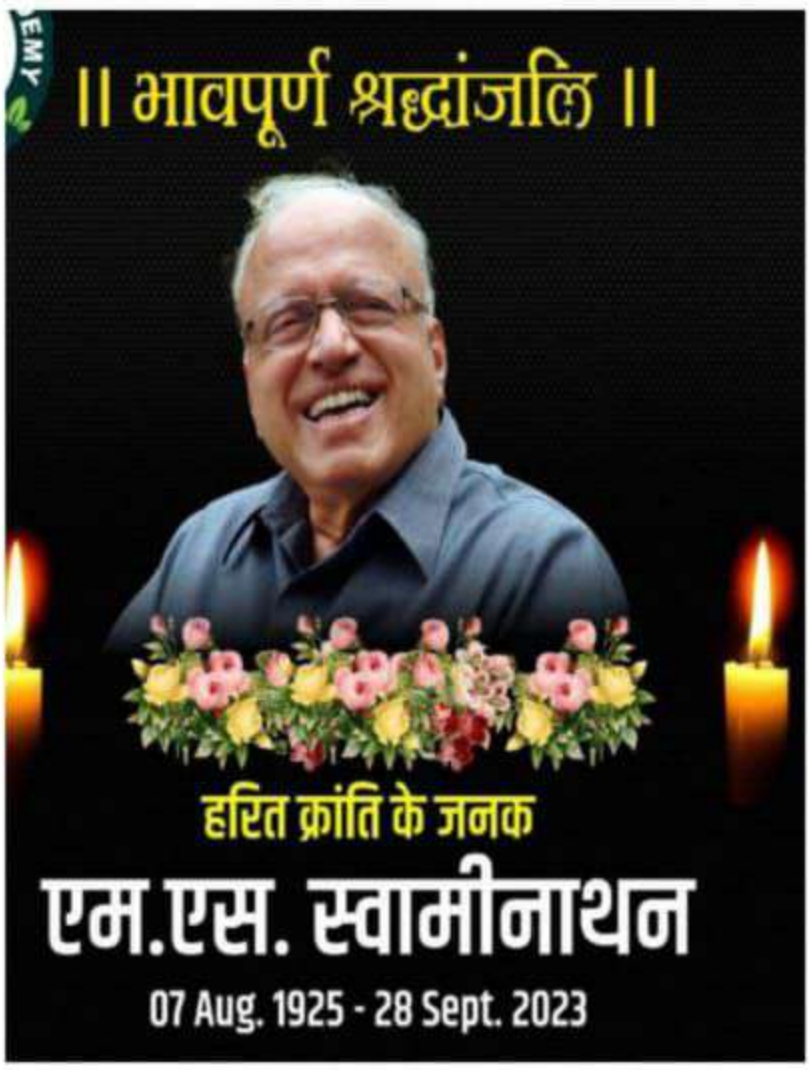

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11:20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

SKS NEWS

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 27 | कानपुर, शुक्रवार 29 सितंबर-2023 | पृष्ठ -8

जहां से प्राथमिक उपचार कर महाराष्ट्र जा रहे थे। तभी यह की सूचना फोन करके पुलिस

हरित क्रांति के जनक स्वामीनाथन के निधन पर कुलपति ने जताया शोक

समाज का साथी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11-20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री,1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

9 सितंबर 2023 | वर्ष:06 अंक: 37 | पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये | उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट,गुजरात,संघ प्रदेश,से

98 वर्ष की आयु में हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन का हुआ निधन,

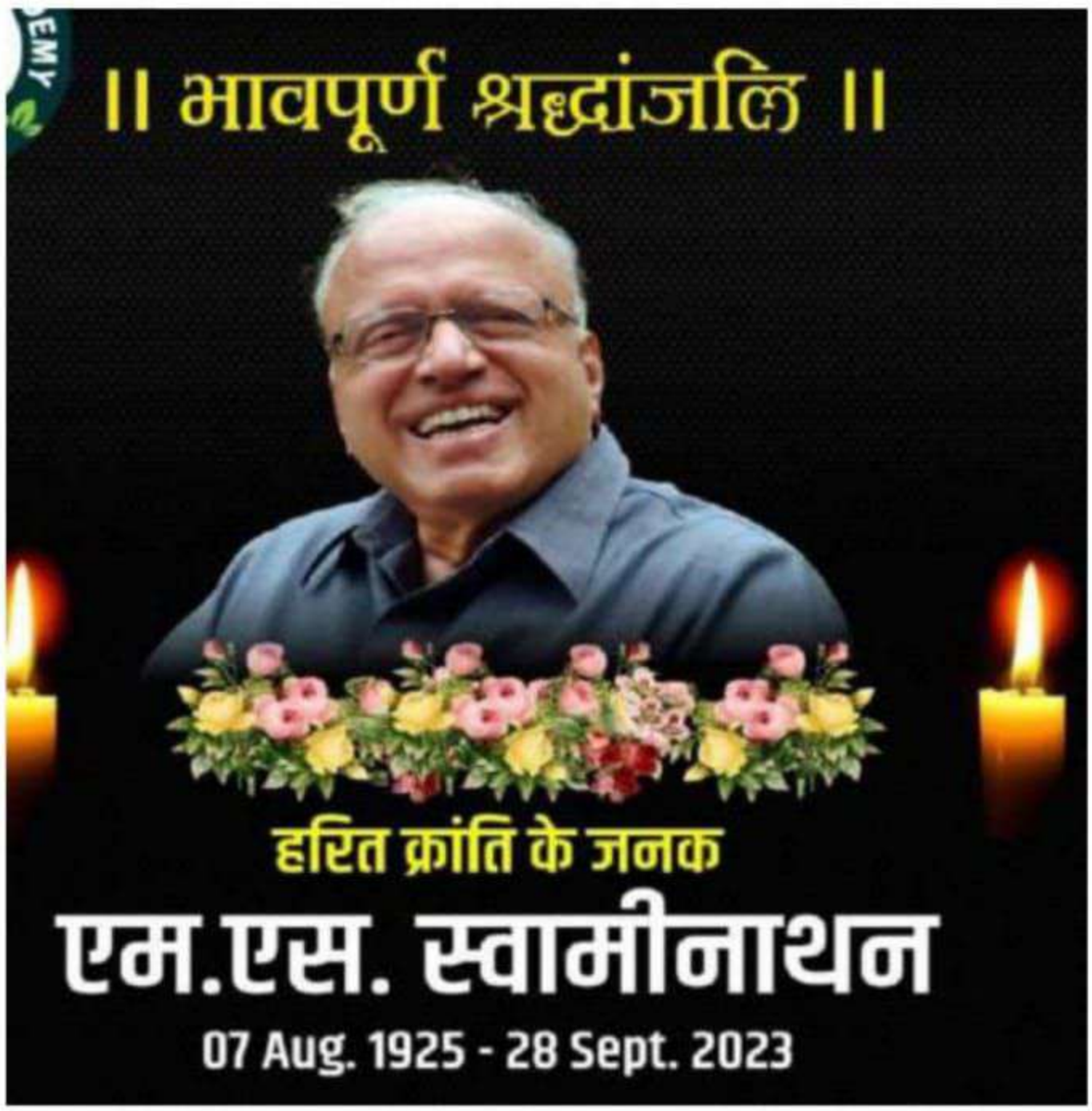

दि ग्राम टुडे, कानपुर।(संजय मौर्य) चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने देश को हरित क्रांति की सौगात देने वाले महान कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। डा स्वामीनाथन ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आज सुबह 11:20 पर अंतिम सांस ली। कुलपति ने कहा कि हमारे देश की इतिहास में उनके अभूतपूर्व कार्यों ने लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। डॉक्टर सिंह ने बताया की 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु की कुंभकोणम में जन्मे डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन के वैज्ञानिक थे। उन्होंने 1966 में मेक्सिको के बीजों को पंजाब के घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए थे। कुलपति ने बताया की डॉक्टर स्वामीनाथन को 1967 में पद्मश्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहे जाते थे। उन्होंने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 1972 से 1979 तक तथा अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 1982 से 1988 तक महानिदेशक के रूप में काम किया।

हिंदुस्तान 29/09/2023

हरित क्रांति के जनक के निधन पर शोकसभा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में गुरुवार को हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन के निधन पर शोकसभा हुई। विवि के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि एक युग का अंत हुआ है। डॉ. स्वामीनाथन ने खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की थी। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में कई बड़े बदलाव किए थे।